मेला है चार दिन का | By Gyanendra Sharma |

मेला है चार दिन का
एक रोज़ सबको जाना,
सामान सौ बरस का,
पल का नहीं ठिकाना।

मलमल के रोज़ साबुन,
चमका रहा है जिसको,
इत्रों फुलेल से तू,
महका रहा है जिसको,
काया ये ख़ाक होगी,
ये बात ना भूलाना,
सामान सौ बरस का,
पल का नहीं ठिकाना।

मन है हरी का मंदिर,
इसको निखार ले तू,
कर-कर के कर्म अच्छे,
जीवन सवार ले तू,
पापों से मन हटा ले,
प्रभु को अगर है पाना,
सामान सौ बरस का,
पल का नहीं ठिकाना।
Bhajan Diary

एक रोज़ होगी जर्जर,
कंचन सी तेरी काया,
तिनका तलक भी तुझसे,
ना जाएगा हिलाया,
रह जाएगा यहीं पर,
धन महल और ख़ज़ाना,
सामान सौ बरस का,
पल का नहीं ठिकाना।

साथी है दो घड़ी के,
कहता है जिनको अपना,
जग नींद से ओ मूर्ख,
जग रैन का है सपना,
गाए जा ज्ञान निस दिन,
हरी नाम का तराना,
सामान सौ बरस का,
पल का नहीं ठिकाना।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%b2%e0%a4%be-%e0%a4%b9%e0%a5%88-%e0%a4%9a%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%a6%e0%a4%bf%e0%a4%a8-%e0%a4%95%e0%a4%be-by-gyanendra-sharma/